आतुर रहता है। महाराज कुलशेखर को भय है कि अन्त समय में उनका कण्ठ कफ और वात से इतना अधिक स्तंभित हो जायगा कि वे भगवन्नाम का कीर्तन भी नहीं कर सकेंगे। इसलिए इस समय जबकि शरीर सब प्रकार से स्वस्थ है, देह को त्याग देना श्रेयस्कर होगा। अर्जुन की जिज्ञासा है कि ऐसे अवसरों पर किस साधन से मन कृष्णचरणाम्बुज में निश्चल रह सकता है।

श्रीभगवानुवाच।
अक्षरं ब्रह्म परमं स्वभावोऽध्यात्ममुच्यते।
भूतभावोद्भवकरो विसर्गः कर्मसंज्ञितः।।३।।

श्रीभगवान् उवाच=श्रीभगवान् ने कहा; **अक्षरम्**=अविनाशी; **ब्रह्म**=ब्रह्म; **परमम्**=दिव्य; **स्वभावः**=सनातन जीवस्वरूप; **अध्यात्मम्**=अध्यात्म; **उच्यते**=कहा जाता है; **भूतभाव उद्भवकरः**=जीवों के पाञ्चभौतिक देहों की रचना करने वाला कार्य; **विसर्गः**=सृष्टि; **कर्म**=कर्म; **संज्ञितः**=कहलाता है।

अनुवाद

श्रीभगवान् ने कहा, अविनाशी जीवात्मा को ब्रह्म कहते हैं, उसका नित्य स्वभाव अध्यात्म है और इन प्राकृत देहों की सृष्टिरूप कार्य कर्म कहलाता है।।३।।

तात्पर्य

ब्रह्म का स्वरूप अविनाशी, नित्य और अव्यय (अविकारी) है। परन्तु इस ब्रह्म से परे परब्रह्म भी है। **ब्रह्म** शब्द से जीवात्मा निर्दिष्ट है, जबकि **परब्रह्म** शब्द स्वयं भगवान् का वाचक है। जीव का स्वरूप उस स्थिति से भिन्न है जो उसने जगत् में ग्रहण कर रखी है। मोहावस्था में वह प्रकृति पर प्रभुत्व करने का प्रयास करता है; परन्तु दिव्य कृष्णभावना से भावित हो जाने पर केवल भगवत्सेवा करना चाहता है। मायामोहित जीव संसार में विभिन्न देह धारण करने को बाध्य है। इसी का नाम **कर्म** अथवा मोहमयी विषयैषणा से उत्पन्न होने वाली नानाविध सृष्टि है।

वैदिक शास्त्रों में जीवात्मा को ब्रह्म कहा है; उसके लिए **परब्रह्म** संज्ञा का प्रयोग कहीं नहीं है। जीवात्मा नाना स्थितियाँ ग्रहण करता है—कभी माया के अन्धकारमय अवगाह में निमज्जित होकर जड़-तत्त्व को अपना स्वरूप मान बैठता है तो कभी पराशक्ति को। इसी कारण उसे श्रीभगवान् की 'तटस्था शक्ति' कहा गया है। अपरा अथवा परा प्रकृति में स्थिति के अनुसार उसे क्रमशः पाँचभौतिक अथवा अप्राकृत देह मिलती है। अपरा प्रकृति में ८४,००,००० योनियों में से कोई देह मिल सकती है, जबकि परा प्रकृति में एक ही प्रकार का दिव्य शरीर मिलता है। अपरा प्रकृति में वह कर्मानुसार देव, पशु पक्षी आदि किसी एक शरीर में जाता है। प्राकृत स्वर्गीय लोकों में पहुँचकर उनमें उपलब्ध विषयसुख के उपभोग के लिए वह कभी-कभी यज्ञ करता है; पर पुण्य के क्षीण हो जाने पर मानव योनि में पृथ्वी पर फिर से लौटना पड़ता है।